वॉच...!!!

एक ज़माना 'रिस्ट वॉच' का था, जिसको हम कलाई में पहनते थे। सुनहरी चेन वाली कलाई की घड़ी प्रतिष्ठा में वृद्धि करती थी! कोई टाइम पूछता तो अपने हाथ और हथेली को मोड़कर देखते थे। देखकर जवाब देने का मज़ा ही और था। दिन भर काम को समयबद्ध पूरा करने में कलाई की घड़ी ही काम आती थी। समय के ऊपर देखरेख रखने के लिए कलाई की घड़ी का ही उपयोग होता था। समय की देखरेख ही हमारे आने वाले समय को सूचित करता है।

'वॉच' का गुजराती भाषा में अर्थ होता है देखरेख। मनुष्य की आँख खुलते ही तुरंत मनुष्य की देखरेख काम पर लग जाती है। उसके बाद मनुष्य को देखरेख रखने की ऐसी लत लगती है कि अंत समय तक ये छूटती ही नहीं। शरीर से लेकर सम्पत्ति की देखरेख में मनुष्य इतना ज़्यादा व्यस्त हो जाता है कि उसे अपने ऊपर खुद का भी ध्यान नहीं रहता। दूसरी सब बातों की देखरेख रखने में वो स्वयं से वास्तव में बेदरकार होता जाता है। मज़े की बात तो ये है कि वो लोगों की तमाम बातों की देखरेख रखने में स्वयं के वजूद पर वॉच रखना भूल जाता है। इस तरह की देखरेख को अपनी भाषा में पर-पंचायत भी कह सकते हैं।

- ब्र.कु. गंगाधर

वैसे देखा जाये तो देखरेख तो जीवन जीने के लिए अनिवार्य है। विशाल अर्थ में देखा जाये तो वॉच के कितने सारे अर्थ हो सकते हैं। लेकिन आध्यात्मिक जगत की बात करें तो उसका मतलब स्वयं के वजूद के ऊपर, स्वयं की देखरेख रखना, ऐसा अर्थ हो सकता है या ऐसा भी हम कह सकते हैं। वास्तव में मनुष्य को दूसरों के बजाय स्वयं के वजूद पर देखरेख रखने की ज़्यादा ज़रूरत है! मनुष्य, जिसपर देखरेख रखना है (स्वयं की) उसपर वह नहीं रखता! मनुष्य को खासतौर पर तो अपने स्वभाव की और अपने कर्मों की देखरेख रखने की ज़रूरत है। जोकि हम नहीं रखते। इसीलिए टेंशन आता है।

संतान हो या सम्पत्ति हो, खेती हो या घर हो, ऑफिस हो या व्यापार हो, आनंद करते हो या शोक करते हो... लेकिन वॉच यानी कि देखरेख तो रखनी ही पड़ती है। जो हम ना रखें, तो क्या होगा...? परिणाम क्या होगा, सबको पता है। तो फिर स्वयं की वॉच क्यों नहीं रखते? मनुष्य स्वयं से क्यों डरता नहीं? लोगों से डरने वाला मनुष्य स्वयं को क्यों छूट दे देता है? मनुष्य स्वयं के कहने में क्यों नहीं रहता? स्वयं के ऊपर वॉच न रखने वाला स्वयं भुगतता है।

एक तरफ दुनिया में हों, इतने व्रत, नियम और कर्मकाण्ड, टीके-टपके करके चार धामों की यात्राएं करता मनुष्य स्वयं की चौकीदारी तो करता नहीं! मनुष्य जैसा है, वैसा दिखे ना, उसकी देखरेख रखता है। स्वयं के कुकर्म बाहर न आ जायें, उसकी पहरेदारी रखता है। और मन में गंदगी के साथ जीता रहता है। आजकल कहते हैं ना, मेरी पर्सनल लाइफ में क्यों इंटरफेयर करता है!

मेरे से आज कोई असत्य कर्म ना हो, झूठ न बोलना, झूठा व्यवहार न करना, किसी के दिल को न दुखाना, आज मेरा स्वार्थ कंट्रोल में रखूं, आज गुस्सा न करूं, आज लोभ लालच-वासनाओं को तिलांजलि दे दूँ..., ऐसी ऐसी तो कितनी ही सारी असंख्य बातें हैं, जिसके ऊपर मनुष्य को चौबीसों घंटे वॉच रखने की ज़रूरत पड़ती है। और विचारों के ऊपर तो वॉच रखनी ही पड़े!

जिस मनुष्य को खुद स्वयं का चौकीदार बनना आता है, वो ही सच्चे अर्थ में ज़िन्दगी जीता है। जो स्वयं के दुर्गुणों का चौकीदार बनता है, वो ज़िन्दगी डर डर कर जीता है, और ये डर कई बार हमारे जीवन को भी हड़प लेता है।

याद रहे कि बाह्य चुनौतियां, और अपनी ललकार से मनुष्य के अंदर रही हुई कमज़ोरियां और कमियां ही ज़्यादा नुकसान करती हैं। स्वयं की देखरेख न रखने वाले इस संसार में सिर्फ स्वयं का महिमा मंडन ही करते रहते हैं!! शुद्ध और सूक्ष्म शुद्ध और परिशुद्ध जीवन तो तब ही संभव होगा, जब मनुष्य स्वयं का स्वयं चौकीदार बनेगा। बाकी तो अमिताभ बच्चन का ये डायलॉग उसके लिए पर्याप्त है 'ये जीना भी कोई जीना है!' मनुष्य को जीने के लिए भी अपनी मौलिकता और अपनी जीवनशैली विकसित करनी होगी।

यहां एक बात याद रखने जैसी है कि जब मनुष्य स्वयं के ऊपर वॉच नहीं रखता, तब दुनिया उसके ऊपर वॉच रखना चालू कर देती है। और उसके अनुसार व्यवहार भी करती है। मनुष्य स्वयं को जो समझता है, उतना वो स्वयं सरल नहीं होता, और स्वयं जो समझता है, इतने दूसरे बुद्धू भी नहीं होते। स्वयं पर वॉच रखने का सबसे सरल तरीका है परमशक्ति परमेश्वर के साथ ज्वाइंट खाता खोलना...! है इतनी हिम्मत? अगर हाँ, तो भला देर किस बात की! आज से खोल लें उनके साथ अपना खाता। ये पढ़ते हुए कहीं भीतर में डर का भाव तो नहीं उत्पन्न हो रहा! ज़रा सोचिए, जिसका ज्वाइंट अकाउंट ही परमेश्वर के साथ है, तो परमेश्वर उसकी वॉच करेगा ना! उसकी देखरेख करेगा ना! इससे अच्छी वॉच आपकी कौन रख सकेगा! तो आइये, हम इस नये वर्ष में इस तरीके से स्वयं का स्वयं पर वॉच रखने की आदत बनायें और जीवन को सरल और सुंदर बनाकर एक आदर्श बनायें। करेंगे ना ये संकल्प? 2018 की विदाई की वेला और 2019 के आगमन पर शुभ संकल्प इस तौर तरीके से करें जो हमारा जीवन सबके लिए उदाहरण ही नहीं, अपितु उन्हें नई जीवन जीने की राह दिखाने की हिम्मत भी दे।

माफी मांग लो व माफ कर दो, तो विघ्न हट जायेंगे

अन्तर्मुखता से एकाग्रता की शक्ति बढ़ती है। परमात्मा की मुरली से ऐसी बातें मिलती हैं जो एक बात भी अन्दर ऐसी लग जाती है तो सारा दिन वो काम करती है। बाबा ने जो सिखाया है वही याद आता है। भले हम सब सर्वशक्तिवान बाप के बच्चे हैं, पर ज्ञान कहता है कि सम्पन्न बनने का पुरूषार्थ करना है। बाबा की इच्छा है मेरा बच्चा मेरे समान सम्पन्न बने। उसके लिए हमारे में कोई अवगुण नहीं हो। न किसी का अवगुण दिखाई पड़े। इस पुरूषार्थ के बिना कोई सम्पन्न नहीं बन सकेंगे।

सबमें गुण हैं तब तो बाबा के घर में बैठे हैं, जैसी स्मृति है वैसी वृत्ति, दृष्टि नैचुरल काम करती है। हरेक मेरी भावना कैच करे, भावना में जो रीयल है वो उसको लग जायेगी, जो फालतू है निकल जायेगी। एक मिनट भी अगर कोई ने फालतू काम में गंवाया तो बाबा क्या कहेगा!

प्रश्न : अगर हमारे से कोई पाप कर्म, गलतियां होती हैं, तो उससे किसी को दुःख पहुंचता है, लेकिन कभी हमारे से अन्जाने में किसी को दुःख मिलता है तो वो हिसाब किताब कैसे गिनती होता है?

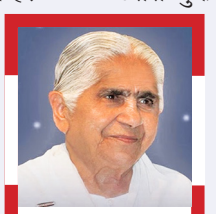
दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

उत्तर : मेरे से किसी को कुछ दुःख न मिले, इस भावना से मैं आज ज़िन्दा हूँ। पहली बात हम किसी को दुःख न देवें, दूसरी बात अगर जाने अन्जाने में किसी को दुःख मिला और मुझे पता चला तो उनसे तुरंत माफी मांग लें, इसमें अहंकार नहीं होना चाहिए। मैंने इसको ऐसे थोड़े ही कहा, समझके कहा सुधरने के लिए कहा, नहीं। कोई समय था जो हम सबकी आपस में ऐसी भावना होती थी, तो बहुत रिगार्ड होता था। कोई भी आत्मा ऐसी नहीं थी जो एक दो को दुःख देवे। कोई ऐसी बात हो भी जाए तो माफी मांग लेना अथवा माफ कर देना। दुःख देना भी नहीं पर लेना भी नहीं। सूक्ष्म अगर माफी मांगना आता है तो कहीं कोई कार्य में विघ्न नहीं आयेंगे, आयेंगे भी तो उससे मुक्त हो जायेंगे, इसमें अगर देही अभिमानी नहीं होंगे तो बाबा की याद नहीं ठहरेगी। मैं सबको सुख दूँ, इसका मतलब यह नहीं कि मैं आपको पैसा दूँ तो आप खुश हो जाओ और मेरा चेला बन जाओ। उसमें कोई सुख नहीं है, वो अल्पकाल का सुख है।

तो हरेक के साथ मित्रता भाव रखना, अपना मित्र बनना। आत्मा अपना शत्रु आप है, मित्र आप है। अगर सुधरते हैं, अच्छी जीवन बनाते हैं, अटेन्शन रखते हैं तो बाबा उसमें शक्ति देता है। मान और मनी के आधार पर एक दो से खुश होना या एक दो को खुश करना - यह कोई खुशी देना नहीं है। वैसे खुश रहना, खुशी देना पुण्य कर्म है, उनसे पाप नहीं होगा। पुण्य कर्म जितने बढ़ेंगे तो रहा हुआ कोई पाप होगा वह अपने आप मिट जायेगा।

हम सब ब्राह्मणों की मरजीवा लाइफ है यानि पुरानी लाइफ जो लौकिक रीति से थी वो भले अच्छे घराने की होगी परन्तु अभी मैं ईश्वर के घर की हूँ, तो मरजीवा जीवन में पुराने लाइफ की कोई भी, किसी की भी बात है वो मेरे में न हो। बीती सो बीती, अभी प्रेज़ेंट रहना है तब बाबा मेरे सामने प्रेज़ेन्ट रहेगा। भगवान के लिए कहते हैं वो जानी जाननहार है, हाज़िरा हज़ूर है, यह भावना भक्तिमार्ग में थी। परन्तु अभी प्रैक्टिकल भगवान के बच्चे हैं, उसने हर कर्म के गति की जानकारी दी है। यह भी बताया है तुम याद में रहो तो पास्ट इज़ पास्ट कर दूंगा। प्रेज़ेन्ट में क्या करने का है, वो भी सिखाता है।

खुश रहना और करना, हमारी ड्यूटी

आप सबके मन की खुशी आप सबके चेहरे से दिखाई दे रही है और ब्रह्माकुमार या ब्रह्माकुमारी बनने के बाद तो ज़्यादा खुशी ही रहती है। कोई कारण वश कोई की खुशी कभी थोड़ी कम हो जाती है तो भी उन्हें फिर से वापस खुश होने में टाइम नहीं लगना चाहिए। उसी समय ही बाबा के पास जाके बाबा को कहना चाहिए कि बाबा हमारी खुशी हमारे पास ही रहेगी। और बाबा से खुशी लेके चलेंगे, फिरेंगे, देखेंगे, सब कार्य व्यवहार करेंगे तो कभी खुशी कम नहीं होगी। वैसे खुशी गंवानी नहीं चाहिए, खुशी गंवाने से आपने देखा होगा कि अवस्था अच्छी नहीं रहती है। ऐसे भी खुश रहने वाला ही सभी को अच्छा लगता है, या सीरियस रहना अच्छा लगता है? बाबा की शक्ल देखते हैं तो सदा खुशी की लगती है ना! बाबा बहुत अच्छा लगता है ना! जैसे बाबा सबको अच्छा लगता है ऐसे हम भी सभी को अच्छे लगें। सबका बाप से प्यार बहुत है तो बाप समान बनना है ना! तो फिर यह ट्रायल करो, रोज़ सवेरे उठते ही अपने से विशेष यह प्रॉमिस करो कि इस सप्ताह में कुछ भी हो जाए, किसी भी कीमत पर मुझे मेरी खुशी नहीं गंवानी है। जैसे ही सवेरा आरम्भ हो, तब से लेके सारा दिन और रात को सोने तक खुश रहना है और खुश करना है, यह याद रखना है। हर घण्टे चेक करके नोट करो, अभी जो समय बीता वो खुशी में बिताया या खुशी के साथ गम तो नहीं रहा? सारा दिन रात खुशी आई और गई , ऐसे तो नहीं होता?

दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

योग में बैठते हैं, बाबा से मुलाकात करते हैं, बाबा को कहना चाहिए, बाबा मुझे आज खुश रहना है, इसमें आप मददगार बनना, ऐसे बाबा से बातें करना तो कभी खुशी नहीं जायेगी। ऐसे ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियों की खुशी जानी नहीं चाहिए क्योंकि हम परमात्मा के बच्चे हैं। वो खुश नहीं रहेंगे तो दुनिया का क्या हाल होगा! क्योंकि बाबा ने हम बच्चों को निमित्त बनाया, सबको खुश रखने का काम दिया है या कहें ड्यूटी दी है। इसलिए हमको तो पहले खुश रहना पड़ेगा ना!

दिल से मेरा बाबा कहो तो दिल खुश रहेगी। मेरा बाबा, प्यारा बाबा, मीठा बाबा। प्यारा कैसे भूल सकता है! बाबा ने बहुत खुशी का खज़ाना दिया है तो कभी भी हमारे फेस से खुशी गायब नहीं होनी चाहिए क्योंकि हम परमात्मा के बच्चे हैं। तो परमात्मा के बच्चे और खुश न रहें, यह हो ही नहीं सकता। इसलिए खुशी कभी नहीं गंवाना, जो भी कोई कुछ बात हुई हो, उसे किसी को सुना करके वा कैसे भी करके पेट से निकाल दो। उसको अंदर में नहीं रखो। बाबा के बच्चों को कभी भी कोई अचानक देखे ना, तो खुशी वाली शक्ल ही दिखाई देवे। हो सकता है? अच्छा लगता है ना आपस में ऐसे मिलने से खुशी होती है ना। वाह बाबा वाह! वाह बाबा के बच्चे वाह! वाह ड्रामा वाह!

हमें दीपक बन पूरे विश्व को रोशन करना है

भक्त खुद को जगाते या भगवान को? वह हैं देश भक्त और भगवान भक्त। हम हैं भगवान के बच्चे विश्व कल्याण के भक्त। हमारे मन में विश्व को पावन बनाने की, पवित्रता सुख शांति देने की शुभ कामना है। हम चाहते हैं सारी विश्व पावन बने, विश्व कल्याण हो। अपना एक ईश्वरीय राज्य, एक धर्म, एक भाषा, एकमत हो जाए तो विश्व में शांति होगी। हम सभी की बुद्धि में विश्व कल्याण की भावना है। हम विश्व कल्याण की सेवा पर हैं।

हम सब बच्चों को, उसमें भी विशेष कन्याओं माताओं को, जो कर्मबंधनों से मुक्त हैं उन्हें बाबा ने बहुत बड़ी ज़िम्मेवारी दी है, सेवा दी है, वरदान दिया है। बख्तावर बाबा ने हमारी तकदीर बनाई है। हम सब यह जानते हैं कि हमारे जीवन की जो घड़ियां हैं वह स्वयं भगवान ने हमारी रेखायें बनाई हैं। हमारी रेखाओं में बाबा ने विश्व की सेवा के साथ महादानी, वरदानी मूर्त बनाया है।

दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका

क्या सचमुच हरेक स्वयं को इतना भाग्यवान समझ अमृतवेले आँख खोलते ऐसा अनुभव करते हो? जीवन दाता ने हमारे जीवन की एक एक घड़ी स्वयं की और अन्य की जीवन बनाने के लिए दी है। हमारा जीना किसके लिए है? स्वयं के लिए या विश्व के लिए? लोग कहते जीवन है खाना, पीना, मौज करना। दूसरे कहते देश भक्ति के लिए, तीसरे कहते हमारा जीवन भगवान के लिए है। लेकिन आप सबका जीना किसके लिए है? यह कुमारी जीवन इस संगम पर बहुत बहुत महत्वपूर्ण है। इस जीवन को इतना महत्वपूर्ण समझते हो? एक-एक कन्या लाखों की माँ है। एक दुर्गा अनेकों की भावना पूर्ण करने वाली है। एक दुर्गा के ही लाखों भक्त हैं। संतोषी माँ, काली, सरस्वती, लक्ष्मी के अनेकानेक भक्त हैं तो आप सब इतना पूज्य अपने को समझती हो? वह एक कन्या कौन है? वह एक कुमारी कौन है? मैं कई बार सोचती हूँ कि भोजन की जो एक ग्राही खाते वह किसलिए खाते? टेस्ट के लिए या इस रथ से सेवा करने के लिए खाते? हम खुद के लिए हैं या खुद की खुदाई के लिए? मैं भारत की माँ हूँ या विश्व की माँ हूँ। बाबा ने मुझे स्वयं ही भाग्य खींच कर दिया है। बाबा ने कहा है तुम एक एक शक्ति हो। क्या ऐसा स्वयं को समझते हो? मैं 500 कमाने वाली नौकरानी हूँ या विश्व की सेवाधारी हूँ? मेरे प्राण, मेरे श्वास, मेरे संकल्प विश्व के लिए हैं या स्वयं के लिए? बाबा के लिए है या स्वयं के लिए? बाबा के साथ विश्व है। यदि स्वयं को विश्व सेवाधारी नहीं समझते तो मैं किसलिए ज़िंदा हूँ, मैं किसलिए हूँ?

जीवन में सुख किस बात में है? शादी करूँ, प्रवृत्ति बनाऊं, गृहस्थी बनाऊं या अनेक आत्माओं की दुआयें लूँ? मैं स्वयं को डायमन्ड बनाकर औरों को डायमन्ड बनाने लिए हूँ या ऐसे ही? खुद से पूछो कि मेरी तकदीर का सितारा किसने जगाया है? अपनी तकदीर पर मुझे नाज़ है? मैं छोटी नहीं हूँ। पहले खुद से पूछो, निर्बल हूँ या बलवान? बकरी हूँ या शेरनी? विश्व कल्याण की सेवा के लिए हूँ या हिलती हूँ? निर्भय हूँ या भयभीत? हरेक ने अपना फैसला क्या किया है? मुझे बाबा ने भाग्य दिया है विश्व कल्याण के लिए। मुझे अनेकों का उद्धार करना है।

यदि यह फैसला है तो सब फैसला है, फिर तो सेंटर पर रहने के लिए अपनी तैयारी करो। अभी अपने आप से पूछो मैं ज्ञान में चल सकूंगी? चलना है तो पूरा मरकर चलना है। ब्रह्माकुमारी जीवन माना बाबा का नाम बाला करना है, ना कि बदनाम।

बाप का बनना अर्थात् जीवन से मरना। इस जीवन में कोई भी आसक्ति, ममता है उससे भी मरना। पुराने स्वभाव, मूड ऑफ, ज़िद्द, क्रोध, छोटी मोटी गलतियां सबसे मरना है। स्व परिवर्तन करना है। परिवर्तन अर्थात् मरना। जितना परिवर्तन करेंगे उतना बाप से प्यार रहेगा। अगर दीपक बनना चाहती हूँ तो अंधकार मिटाना है। जो दीपक जगमगाता रहे, वही प्यारा है। अगर टिमटिमाता हुआ दीपक है तो उसे उठाकर रख देते। रोशनी वाला सम्भाल कर रखते। यदि दीपक हूँ तो सबको रोशन करना है।